पार्ट 3

प्रश्न 13. यात्रीक रचना संसारसँ परिचय कराउ।

उत्तर :– प्राचीन भारत वा प्राचीन ग्रीस देशमे सबि दन कवि शब्दक प्रयोग द्रष्टा, क्रांति द्रष्टा, सर्वज्ञ, नियन्ताक अर्थमे होइत रहल। एहि अर्थमे कोनो कवि आदि अहिसँ ओ जे कोनो भाव सब व्यक्त कएलनि, जे किछु तथ्य विचारलनि तकरे महत्व देल जाइत रहल। यात्री जी की कयलनि, की लिखलनि, की कहलनि तकर महत्व एहि दृष्टिसँ बुझबाक थिक।

यात्री जीक पूरा नाम छलनि बैद्यनाथ मिश्र यात्री हिनक जन्म 11 जून 1911 ई0 के तरौनी गाममे भेलनि। किछु दिन गाम, किछु दिन सतलखा मातृकमे त किछु दिन काशीमे संस्कृतक अध्ययन कयलनि। एकर बाद ओ बौद्ध भिक्षु भ गेलाह आ लंका चल गेलाह। यात्री जी विश्वक कतेको भाषाक अध्ययन कैलनि। हिन्दीमे नागार्जुन नामसँ प्रगतिवादी कवि आ लेखकक रूपमे अखिल भारतीय नाम–यश अर्जित कयलनि। पुनि अपन कौलिक संस्कारके स्वीकार कयलनि आ मातृभाषा मैथिलीक भण्डारके समृद्ध कयलनि। हिनक निधन 5 नवम्बर 1998 ई0 के भ गेलनि।

मैथिलीमे प्रकाशित कृति अछि– काव्य संग्रह चित्रा 1949 पत्रहीन नग्न गाछ 1967 80 सँ अधिक स्फुट कविता जे विभिन्न पत्र पत्रिकामे प्रकाशित अछि।

उपन्यास– पारो 1942 नवतुरिया 1954 बलचनमा 1966।

हिन्दी मे– लगभग तीन दर्जन पोथी प्रकाशित छन्हि जाहिमे बाबा बटेसर नाथ, दुखमोचन, नई पौध, रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बरूण के बेटे, कुंभीपाक, इमरतिया (उपन्यास)। युगधारा, सतरंगे पंखोवाली, प्यासी पथराई आँखे, हजार–हजार बांहोवाली, तालाब की मछलियाँ, भूल जाओ पुराने सपने आदि कविता संग्रह चर्चित ओ प्रकाशित अछि।

मौथिली साहित्यमे यात्री जीक नाम अविस्मरणीय भ गेल अछि। गद्य आ पद्यमे, उपन्यास आ कविता मे। महाकवि यात्रीक पहिल उपन्यास अछि–पारो एहि पारो उपन्यासक प्रकाशन भेला पर मैथिलमे जे प्रतिक्रिया भेल ताहिमे पंडित त्रिलोकनाथ झाके कथ्य छलनि स्वच्छन्द प्रोफेसर हाथ पैर दन्तावलि पूर्वहि तोड़ि गेल। आब दुर्भाग्यसँ सम्प्रति पारो कपारो

Scanned by CamScanner

धरि फोड़ि देल। एतय स्वच्छन्द प्रोफेसर सँ कन्यादान क लेखक प्रो0 हरिमोहन झा अछि। पारोक संदर्भमे प्रो0 श्रीकृष्ण मिश्रक टिप्पणी रहनि पारोक कथावस्तु ततेक निम्नस्तरक अछि जे हमरा समाजक साहित्य नहि भ सकैछ। मुदा प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ0 जयकान्त मिश्र एहि विचार सभक खंडन करैत पारो के यात्रीक अन्यतम उपन्यासक कोटिमे रखलनि। ओ पारो के नवतुरिया आ बलचनमा सँ बेसी सफल मानलनि। आधुनिक कालमे तीन शक्तिक प्रधानता अछि ज्ञान शक्ति, धन शक्ति आ बल शक्ति। मैथिल सामाजक स्त्रीक अहो सँ एहि तीनू शक्तिसँ, पुरूष प्रधान समाज वंचित करैत आबि रहल छल। मुदा विज्ञानक ज्ञानसँ आ सामाजिक चिन्तक साहित्यकारक सत् प्रयाससँ, एहि दिशामे बेस सफलता भेटल। पूर्वमे मैथिल समाज रूढ़िवादी परम्परासँ टस–मस होमय लेल तैयार नहि। एहिमे प्रथम योगदान भेल प्रो0 हरिमोहन झाक तकर बाद यात्री जी स्त्रीक वैवाहिक समस्या पर कठोरतासँ प्रहार कैलनि। पारो आ नवतुरिया ओकरे परिणाम थिक।

पारो उपन्यासक कथा नायिका पारो (पार्वती) मे मेधा अछैत ओकरा आधुनिक वा स्कूली शिक्षा नहि देल गेल। पारो भले अशिक्षित हो किन्तु ओकरामे स्वाधीन चेतनाक अंकुरणके स्पष्ट रूपसँ देखल जा सकैछ। पारोके मैथिल स्त्रीक पराधीनताक स्पष्ट ज्ञान छैक। से रामायणक पीठ पर पारो एकटा कविता लिखने अछि जाहिसँ स्त्री पराधीनताक स्पष्ट बोध विदित होइछ।

सखि हम करमक हीन

कोन विधि खेपब दीन

कोन विधि खेपब राति

निठठुर पुरूषक जाति

कोन विधि काटब काल

हैत हमर की हाल।

पारो के रचनकाल धरि मैथिल स्त्रीगण अपन दुर्दशाक कारण पुरुष वर्गके मानि रहल छलीह। पुरूषक समाजमे एकाधिकार छलन्हि। ई एक अदभुत संयोग जे पारो के प्रकाशन वर्ष 1946 ई0 मे स्त्री सशक्तिकरणक एक अदभुत पोथी द सेकेंड सेक्स प्रकाशित भेल। एहि पोथीक लेखिका सिनमे द बुआक अनुसारे स्त्रीक दुर्दशाक कारण पुरुष अछि।

Scanned by CamScanner

एहि पोथीक प्रकाशन सँ संसार भरिमे हड़कम्प मचि गेल। हुनक कथ्य अछि। वस्तुतः स्त्री जन्म नहि लैत अछि, ओकरा स्त्री बनाओल जाइत अछि। ओना स्त्री कोनो तरहे पुरूषसँ कम तर नहि होइछ। यात्री जी दुनू उपन्याासमे स्त्रीके, स्त्री बनयवाक प्रकृयाके अदभत रूपे रेखांकित कयलनि अछि। पारो प्रकाशित होइते मैथिल समाजमे हड़कम्प मचि गेल। यात्रीक विरूद्ध परम्परावादीक मोर्चा खोलल गेल, मुदा यात्री अडिग रहला।

एखन धरि मैथिली साहित्यमे पारो सदृश्य स्त्री पात्र नहि भेटल जे अपन व्याहिता पतिके देवता मानबाक धारणाके समूलतः ध्वस्त करैत हो। घृणा ओ विरक्तिसँ पारो अपन पतिके दानव थीक एहन–एहन व्यक्ति एहि तरहक जंतुसँ फराके रही ताहीमे कल्याण। एहि तरहक घृणाक अभिव्यक्तिक कारण अनमेल विवाह थिक। यात्री जी अनमेल विवाहक घोर विरोधी रहथि।

मैथिल ब्राह्मणक विवाह–पद्धतिके रूढ़िबद्ध करबामे पंजी व्यावस्था के महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। इतिहासकार रामकरण शर्मा मिथिला का इतिहास मे पंजी व्यवस्थाक जटिलताके उद्घाटित कैलनि अछि। हुनक कथ्य अछि जे मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक कन्याके अपन जीवन साथी चयनक कोनो अधिकार त नहिएँ छैक, माय बाप सेहो अपन इच्छानुसार वर चयन नहि क सकैत छथि। एहि व्यवस्थामे प्रमुख छल पंजिकार। पारो एहि पंजीकारक चांगुर मे फँसि जाइछ। एखनो धरि मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ एहि व्यवस्थासँ विरोध कएने छथि रतिनाथ की चाची मे। एहि पंची व्यवस्थाक कारणे एक अबोध कन्या पारोक विवाह पैतालीस बरखक द्वितीय वरसँ होइत अछि। स्त्रीगणक लेल विवाह कोनो उत्सवसँ कम नहि होइत अछि, मुदा विवाहक जे रूप ओ देखलनि ताहिसँ दोबारा स्त्री जातिमे जन्म नहि लेबए चाहैत अछि। पारो यथार्थ वेदनाके अपने कहैत अछि चतुर्थीक रातिमे हमरा आगूमे दस टा दसटकही लोट पसारि कए कहने रहथि– आओर चाही त से कहू? तामसे हम लहर लगलहुँ। हे भगवान लाख प्रत्यवाय करी, फेर स्त्रीगण भ क एहि देशमे जन्म नहि दिय। छीया पैतालीस वर्षक नरपिशाच एक अबोध कन्याक आगाँमे दसटकही लोटक पथार एहि खातिर लगाबै कि। पारो बेर–बेर अपने पतिसँ बलात्कारित होइत अछि। अपन देशमे पहिने यौन सम्बन्ध तखन प्रेम एकर विपरीत पाश्चात्य देशमे पहिने प्रेम तखन यौन संबंध। यात्री प्रेम आ जान पहिचानक पूर्व विवाहक पूर्ण विरोध अपन उपन्या समे कैलनि अछि। यात्री जीक चाहत छनि आब पुनि किओ पारो नहि होथि हमरा समाजमे।

Scanned by CamScanner

पारो उपन्यासक कथा नायिका पारो (पार्वती) मैथिली उपन्यासक पहिल नायिका थिकीह जे अपना मोनसँ विवाह करबाक इच्छा व्यक्त कैलक। कथा नायक बिरजूके पारो कहैत छैक भाइये–बहीन मे जँ विवाह दान होयतैक त केहन दिव होइत। कत कहाँदनक अनठिया के जे लोक उठा क ल अबैय से कोन बुधियारी? जाहि तरहक पारोक वियाह भेलै ताहिमे स्त्रीगण नहि जीबैत अछि नहि मरैत अछि, घुटि–घुटि क काहि कटैत रहि जाइछ। पारो बिरजू सन पति चाहैत छल जे ओकर भावनाके बूझि सकै। ते अन्तिम बेर पारो बिरजूके गोर लगैत कहै छै तेहन आसिरवाद ने हमारा तो देने जाह बिरजू भैया जे अगिला जनममे ई सामति नहि उठबए पड़ए हमरा तोरा बीचमे पिसियौत ममियौतक संबंध नहि, ओहि जनममे हम तो एहि बात पर आलोचना सभसँ बेपरबाह, अपन उदेश्यमे लागल रहलाह। आ किछू बर्षक बाद अनमेल विवाहक पक्षधर लोकनिक नाकमे कौड़ी बान्हबामे लागि गेलाह। आ से चतुरा चौधरी सनक कलामीके नाकमे कौड़ी बन्हलनि 1954 ई0 नवतुरिया मे।

मैथिल समाजमे अनमेल विवाह वृद्ध विवाह आ नारी शोषणक समस्याक जड़ि बड्ड गहीर धरि छलैक। रूढ़िवादिताक कारण समाज जर्जर भ गेल छल। तत्कालीन साहित्यकार सभ मिलिके अपना–अपना ढंगसँ सुधारक प्रयास क रहल छलाह। यात्री जीक पारो जतय वृद्ध विवाहक कथा पर आधारित फ्रॉयडवादी मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास कहल गेल त नवतुरिया मार्क्सक साम्यवादसँ प्रभावित अछि। एहुमे वृद्ध विवाहक समस्या अछि, मुदा तत्क्षण यात्री समाधान सेहो प्रस्तुत कैलनि अछि।

कथानकमे वृद्ध विवाहक विरोध नवतुरिया दल द्वारा भ रहल अछि। मुदा नओगछिआक नवतुरिया दलके गामक खोखाइ पंडितक जिनका अपन छौ टा बेटी बेचबाक पुरान अनुभव छलनि। एहि बेर पंडित अपन चौदह वर्षक नातिन विशेश्वीके सेहो नौ सय टाकामे साठि वर्षक बूढ़ चतुरा चौधरीक हाथें बेचबाक प्रयासमे लागल छथि। जखन वृद्ध वर कन्याक दाम चुका क विआह करय पहुँचैत छथि त गामक नवतुरिया दल हुनका भगा दैत छनि। आ विशेश्वरीक वियाह एक सुयोग्य वर जे साम्यवादी नेता, प्रगतिशील विचारक वाचस्पति सँ करा देल जाइछ। नवतुरियामे तत्कालीन मिथिलाक गाम–घरमे पसरल कुप्रथा, कन्या विक्रय, अनमेल विवाह, बहु विवाहक विरूद्ध सामुहिक प्रयत्नक सफलता उपन्यासक विशेषता थिक। गामक परिवेश आइ किछु बदलल अवश्य अछि, सामाजिक समस्या सेहो नव रूपमे प्रगट भ रहल अछि, तथापि एहि उपन्यासक यैह निष्कर्ष अछि।

Scanned by CamScanner